धर्म जीवन

फरवरी 2006

- एक सभा
- मां केवल मां है।
- माता के सम्बन्ध में कुछ प्रंसग
- बरसी की सभा
- शुभ संग्राम

देव गुरू भगवान का झंडा

देव गुरू भगवान का झंडा, जहाँ-जहाँ लहराता है,
सत्य उपास्य देव का झंडा, जहाँ-जहाँ लहराता है,
सत्य देव का विजय पताका, जहाँ-जहाँ लहराता है,
सत्य और शुभ के देवराज की, वहाँ घोषणा करता है,
मिथ्या और अशुभ नाशन की, वहाँ घोषणा करता है,
उनके देव प्रभावों का जब, कार्य वहाँ पर होता है। (1)

सत्य धर्म का ज्ञान फैलता, मिथ्या धर्म न रहता है,
मिथ्या सकल देवते जाते, मिथ्या पूजन जाता है। (2)

मिथ्या योग भजन है जाता, मिथ्या जप तप जाता है,
मिथ्या गुरू तीर्थ हैं जाते, मिथ्या दान भी जाता है। (3)

मिथ्या सब विश्वास हैं जाते, कर्म पुरोहित जाता है,
पापों से उद्धार है होता, अत्याचार न रहता है। (4)

सम्बन्धों में मेल है आता, शान्ति का सुख मिलता है,
विश्व के सकल विभागों का ही, भला वहां पर होता है। (5)

जो कुछ बुरा वही है जाता, भला सभी का होता है,
विजय पताका सत्य देव का, यह हमको बतलाता हैं। (6)

मिथ्या के संग युद्ध में आखिर, सत्यलाभ जय करता है,
साथ अशुभ के युद्ध में आखिर, शुभ ही जय को पाता है। (7)

सत्य देव की जय हम चाहें, यह हमको सिखलाता है,
उनकी जय मेरी जय है, यह शिक्षा यह देता है। (8)

धर्म जीवन

खण्ड 18 अंक 2
फरवरी 2006
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

एक सभा

कुंआ खेड़ा का स्थान है। श्रीमान रत्न सिंह जी का घर हैं। उनके घर के मन्दिर में प्रात: सभा हो रही है। उसमें रत्न सिंह जी के बेटे और उनकी धर्म पत्नी और स्त्री पुरूष शामिल हैं। सहारनपुर से श्रीमान रत्न सिंह जी के भतीजे सुमन भी पधारे हुए हैं। चण्डीगढ़ में श्रीमान बलदेव सिंह जी अपने धर्म सम्बन्धी श्रीमान ओम प्रकाश जी वर्मा और अन्य साथियों के साथ पहुंचे हुए हैं और सभाएं करवा रहे हैं।

पहले रत्न सिंह जी ने बहुत अच्छे भावों से भर कर दो भजन गाए फिर श्रीमान जी ने अपना अपना ब्यान आरम्भ किया। उन्होंने फरमाया कि मानव जीवन दुर्लभ है यह सौभाग्य से ही प्राप्त होता है, इसकी बहुत कदर करने की आवश्यकता है। इसे सफल करना ही मानव जीवन का लक्ष्य है। यही, मुख्य प्रश्न है कि यह जीवन कैसे सफल हो सकता है, उन्होंने पंक्तियां दोहराई: -

"सफल जीवन उनका है, जो आएं काम औरों के, घटाएं दु:ख जो औरों के बढ़ाएं सुख जो औरों के"

मनुष्य जीवन दूसरों के काम आने से ही सफल होता हैं। दूसरों के अनुचित दु:ख घटाकर और उचित सुख बढ़ाकर मानव जीवन की सफलता है। फिर बताया कि Charity begins at home, माता पिता, बहन भाईयों, पति पत्नी, नौकरों आदि के दुखों को घटाने का प्रयास करना चाहिए। अपने मधुर व्यवहारों से हम दूसरों के दुखों को घटा सकते हैं, और गन्दे व्यवहारों से दूसरो को दुखी करते हैं।

सभापति जी ने Saint Barnaldo का उदाहरण पेश किया। उनकी सेवा की अजब दास्तां है, उनके कुत्ते ने 10 - 12 वर्ष दान मांगने द्वारा अपना जीवन सफल किया। एक कुत्ता उच्च व्यक्ति के हाथ में आकर अपना जीवन सफल कर गया, यह घटना बहुत ही ह्रदय स्पर्शी ढंग से पेश की गई हम देवात्मा के हाथों में आकर अपना जीवन सफल क्यों नही कर सकते? श्रीमान जी ने श्रीमान शादी लाल जी की अपने श्रद्धेय माता पिता के प्रति सेवाओं, और सच्चे सम्मान भरे व्यवहारों का वर्णन किया। वह अपने माता पिता के प्रति भक्ति भाव रखते थे। उनके नाम पर आधा करोड़ से भी अधिक दान करके अपना जीवन सफल कर गए। उन्होंने माता पिता के उच्च सुख को बढ़ाया। उस सारी सुन्दर लीला का दिल के गहरे भावों से सुन्दर चित्र पेश किया, जिससे बहुत ही प्रभाव दायक वातावरण पैदा हो रहा था। इस का नौजवान सुमन जी चौहान पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। वह बहुत ही बेबस हो कर

फूट-फूट कर रोने लगे और सारी सभा में देर तक व्याकुल होकर रोते रहे।

सभापति जी ने श्रीमान बलबहादुर सिंह जी की अपने माता पिता के सम्बन्ध में स्वर्गीय सेवाओं का उच्च भावों से भरकर नक्शा पेश किया, उसके बाद अपने सौभाग्य का ब्यान किया। गुरू महाराज के प्रभाव ही अधिकारी मनुष्य आत्माओं से ऐसे व्यवहार करवा सकते हैं। हमें सदा ऐसे देव प्रभावों की अज़मत को समझना चाहिए और बार-बार देव प्रभाव-दायक वातावरण में पहुंच कर लाभ उठाना चाहिए, तब ही अधिकारी जन जीवन सफल करने के मार्ग पर पड़ सकते हैं।

उपस्थित जनों को निकट आ रहे शुभ जन्म महोत्सव पर पहुंचने के लिए प्रेरित किया।

सभा समाप्त होने पर देव सुमन जी ने दुखी दिल से जारो कतार रोते हुए अपने ताया जी के पैरों में सिर रखकर क्षमा मांगी कि मैंने आपको बार-बार दुख दिए हैं। वह बहुत व्याकुलता से अपने भावों का प्रकाश कर रहे थे। उसी प्रकार अपनी ताई जी के चरणों में गिर कर क्षमा-याचना की। ताया जी और ताई जी ने बहुत प्यार से उन्हें धीरज बंधाया।

इस सारे वातावरण में प्राया सबके दिल पिघल रहे थे और बेबस देवात्मा गुरू के चरणों झुक रहे थे। सब ऐसे देव प्रभाव दायक मण्डल में पहुंचने के लिए ललायत अनुभव कर रहे थे। ऐसा अश्वासन भी सभापति जी को दिया (कई जन महोत्सव पर पहुंचे) जय ध्वनि से सभा की समाप्ति हुई और देव सुमन जी ने 500 रू दान में दिए।

(एक सेवक)

.....*.....

मां केवल मां है

मां कभी नही बदलती, जिंदगी भर मुसीबतों के पहाड़ और दुःख के महासागर लांगते-लांगते थक कर बैठ जाए, तो भी बच्चे की एक पुकार पर दौड़ पड़ती हैं। उम्र के आख़री पड़ाव पर भी उसकी सारी चिन्ताएं, सारी प्रार्थनाएं, सारी दुआएं अपने बच्चों के लिए ही होती हैं।

मां चाहे किसी देश ेव जाति की हो, उसकी अपने बच्चों के प्रति भावनाएं एक जैसी ही होती है, वही रातों को जागना, अपने बच्चों की थोड़ी सी तकलीफ से बेहाल हो जाना, उसको हर मुसीबत से बचाने के लिए समर्पित रहना, अपनी बिमारी, दुःख, तकलीफ को भुलाकर केवल बच्चों के लिए जीना, यह "**मां**" ही कर सकती है। वक्त कितना भी बदल जाए, रिश्ते बदल जाएं, परन्तु मां अपने बच्चों के लिए वक्त से टकरा जाती है, बेशक वक्त बदलने से बच्चे बदल जाएं, परन्तु मां का ममता भरा दिल कभी नही बदलता।

जो बच्चे कृतघ्र बन कर अपनी जन्म दाता, पालन कर्ता, संघर्षमय जीवन जीकर बच्चों को प्रत्येक सुख प्रदान करने वाली माता को भूल जाते हैं, उनकी सुध नहीं लेते या वृद्ध आश्रम में छोड़ देते है, तो भी मां सदा उनके सुख की दुआएं मांगती नज़र आएगी। बेशक बच्चे जब मां को दूर कर देते हैं, तो वह उनको प्यार से छू नही सकती, तो भी उनके मेजों की दराजों में बच्चों की तस्वीरें होंगी, वह उन्हें निकालकर चूमती नजर आएंगी, दूसरो के सामने बच्चों को निर्दोष सिद्ध करने की कोशिश करती नज़र आएंगी। यदि भूले भटके बच्चे मिलने चले जाएं, उनके स्वागत में जुट

जाएगी। एक-एक मां को यदि पता हो कि बच्चे ने शाम को आना है, तो भी सुबह से वह दस बार दरवाजे में जाकर देखेगी। हर आहट उसे अपने बच्चे के आने की आहट का एहसास अनुभव करवाएगी।

मां का रूप शब्दों में ब्यान हो ही नही सकता, यह तो एक एहसास है, जो कुछ न कुछ अनुभव किया जा सकता है। मां का रूप तो ब्राहमण्ड से भी बड़ा है।

मैं जब अपनी मां के रूप को याद करती हूं, तो ऐसा लगता है कि वह दुनियां की सबसे अच्छी मां थी। एक कोमल कन्या जो अपने पिता और उनके तीन भाइयों के बीच एक बच्ची, जिसे लाड प्यार मिलने की कोई सीमा नही रही। मेरी नानी जी ने इस लाड प्यार के बावजूद उनमें घर के कामों, सिलाई और कढ़ाई की योग्यता पैदा की। उनकी कशीदाकार को देखकर हैरानी होती है, जो उन्होंने 18 वर्ष की उम्र में पूरी कर ली थी। पुराने समय में "बाग" के नाम से खददर् रंगकर उस पर कढ़ाई की जाती थी। मेरी माता जी का एक बाग ऐसा बनाया हुआ था, जिसकी एक भी जगह कढ़ाई से खाली नही थी और वह उन्होनें मुझे शादी में उपहार दिया और 30-35 साल बाद मेरा बेटा मेरे से ले गया और उसे बहुत ट्रीट करवाके फ्रेम करवाया, जो उन्होंने 80 वर्ष की ग्रंटी दी कि यह खराब नही होगा। वह 8-9 फुट लम्बा और 4-5 फुट चौड़ा फेम अमरीका में दीवार पर उसके घर में सुशोभित है और जो भी आता है, उसे दिखाकर वह अपनी नानी पर गर्व अनुभव करता है। उन्होंने यह गुण हमारे भीतर भी पैदा किए, अपना घर, अपने बच्चे कैसे सम्भालें, उनके खाने पीने का कैसे ध्यान रखें, यह सब रहनुमाई हमें उनसे मरते दम तक मिलती रही। अनपढ़ हो कर वह बहुत ही पढ़ी लिखी औरतों से अधिक समझ रखती थी।

कुर्बानी उनमें कूट-कूट कर भरी हुई थी। पिछले दिनों मुझे अपनी भुआ जी के घर जाने का मौका मिला, वह भी बूढ़ी है, पर उनके रोते हुए आंसु नही सूख रहे थे कि मेरी 'मां' जैसी भाभी थी, उनके न होने से मैं आनाथ अनुभव करती हूँ। अपने बच्चों के लिए तो वह त्याग की मूर्ति थी ही, अपनी ननदों के लिए, अपने और सुसराल के सम्बन्धियों में भी उनका अलग स्थान था। मेरे ताया जी की बेटी उनके पास ही फार्म में ब्याही हुई थी, एक दिन वह भी रो रोकर बता रही थी कि चाची जी ने मेरे दुःख सुख में मेरी मां से बढ़ कर भूमिका निभाई।

ऐसी मां अपने बच्चों के लिए क्या हो सकती है, उसका अनुमान लगाया जा सकता है। उन्होंने हम चारों बहनों को जिस प्रकार कमाने खाने और अपने ससुराल में जीवन व्यतीत करने के योग्य बनाया, वह एक मिसाल हैं। बहुत से विरोधी हालात होते हुए भी वह हमारी हित के लिए मैदान में डट जाती थी।

वह कोमलता और स्नेह में पली बढ़ी, रात के अन्धेरे में डरने वाली बच्ची, अपने बच्चों के लिए रात-रात भर खेतों में लालटेन लेकर मजदूरों के पीछे घूमती, शेरों की दहाड़ों से भी निडर होकर अपने बिमार पति को सम्भालती, इस प्रकार बूढ़ी हो गई, बिमारियों का शिकार बन गई, परन्तु हमें सुखमय जीवन जीने के योग्य बना गई।

आज उनकी छत्र छाया न पाकर वह कोना खाली लगता है, जहां दुआओं, आर्शीवादों की बौछार होती थी। जहां हमारी, हमारे बच्चों की उन्नति की ख़बर उनकी आखों में चमक ले आती थी और किस उत्साह से सब मिलने वालों के पास उसका खुशी से ब्यान करती थी। हमारे घर में जाने पर बिमार पड़े होकर भी उन्हें यह फिक्र था कि हमने क्या खाया है। हमारी छोटी-छोटी तकलीफों के बारे में भी पूछना नही भूलती थी। ऐसा लगता है कि मां के आंचल तले एक

अजब सन्तुष्टि होती है। बड़ी उमर में भी मां जब तक जिंदा है, आपको बच्चे होने का एहसास बना रहता है।

मां, नेचर के ओर से आए प्रत्येक दुःख को चुनौती के रूप में स्वीकार कर लेती है। मेरे माता जी की जिंदगी में भी बहुत चुनौतियां आई, उनका न केवल उन्होंने हौसले से सामना किया बल्कि अपने बच्चों पर आंच नही आने दी। 'मां' होना ही चुनौती भरा जीवन है। परन्तु मां ही है जो सब बुरे हालातों पर अपनी सन्तान के लिए विजय प्राप्त कर सकती है, चाहे उसका अपना अस्तित्व फ़नाह ही हो जाए। एक कहानी पढ़ी थी कि नेचर में मां को गढ़ा जा रहा था, तो एक अप्सरा ने पूछा कि यह क्या बना रहे हो, "मां को गढ़ा जा रहा है" अप्सरा की जिज्ञासा थी कि "मां कैसी बनानी है?" उत्तर मिला, जिसकी कोख से मानवता जन्में, जिसकी कोख में सृष्टि समा जाए, जिसका स्पर्श बड़ी से बड़ी चोट को सहलाकर ठीक कर दें, जिसका दुलार बड़े से बड़े सदमें से उबार दे, जिसके दो हाथ सबको दिखें, पर हों कई ताकि जीवन संवारने का उसका कर्तव्य बिना बाधा पूरा हो सके, जिसके मन में भी आंखे हो, जिनसे वह दूर बैठी अपनी सन्तान के दुख को देख सके। जो बिमार होने पर भी दस लोगों वाले परिवार के लिए हंस कर भोजन बना दें, नाज़ुक हो पर हर मुश्किल को हरा सकने का दम रखे, जिसके आंचल तले सृष्टि को सुरक्षा मिले, जिसके नेत्रों में अपने बच्चों के लिए स्नेह भरा जल हो और उनके शत्रुओं के लिए ज्वाला, जिसके दर्शन मात्र से मानवता कृत-कृत हों।

एक ऐसा व्यक्तित्व गढ़ा गया, जिसे हम सबको नमन करना हैं। आज के दिन फिर मां से मांग ही रहा हूँ, उनका आर्शीवाद जो वह सदा देती रही है।

एक उपकृत बेटी

सुरजीत बराड़

माता के सम्बन्धों में कुछ प्रसंग

ममता का हक़दार

मैं ने सोचा न था कि शादी के ग्यारह साल बाद जिंदगी ऐसे मोड़ पर ले आएगी। मेरे पति ने मुझसे तलाक मांगा था। सुनकर एक पल के लिए लगा जैसे दुनिया ठहर गई है। मुझे खुद से ज़्यादा अपने बच्चों की फिक्र थी। अश्विन और अन्वेषा, जिनकी उम्र सिर्फ 6 और 4 साल थी। मैं उन्हें कैसे पालूंगी, सोचकर ही मन विचलित हुआ जा रहा था। बच्चों की यह उम्र जहां अच्छे संस्कार-शिक्षा पाने की होती है, वहां उनकी बुनियादी जरूरतें भी पूरी हो पांएगी या नही, नहीं जानती थी। मगर जिंदगी का सामना तो करना ही था। हिम्मत करके दोनों बच्चों की उंगलियां थामे निकल पड़ी एक नई राह पर। जहां बच्चों के लिए कमाने की जद्दोजहद में दिन-भर दफ्तर में निकल जाता, वहीं सुबह व शाम उनके साथ खेल या पढ़ाई में। थकने का हक नहीं था, रुकने का समय नहीं मिलता था।

इसी तरह दो साल गुजार गए। अश्विन 8 का और अन्वेषा 6 साल की हो गई थी। मन में एक डर हमेशा बना रहता था कि उन्हें वो संस्कार दे पा रही हूँ या नहीं, जो उन्हें एक पूरे में रहने से मिलते। दिनभर की थकन के बाद मैं दोनों बच्चों को लेकर ऐसी जगह जातीं थी, जहाँ मन को थोड़ी शांति मिले जैसे पार्क या नदी किनारे। हमेशा की तरह एक शाम बच्चों को लेकर जा रही थी कि देखा एक समुदायिक भवन के कैंपस में ढेर सारे बच्चे और

उनके माता-पिता इकट्ठे हैं। उत्सुकतावश मैं भी बच्चों को लेकर वहाँ पहुंच गई। एक सज्जन माइक पर घोषणा कर रहे थे-'आज मदर्स डे है। मां हमारे लिए सब कुछ करती है और आज का दिन हमें याद दिलाता है कि हम उसकी सेवा करें, उसके प्रति प्यार और आदर व्यक्त करें। हम ऐसा एक मौका आपको देते हैं। सामने ढेर सारे फूल के पौधे हैं। सारे बच्चे अपनी-अपनी मामा को पंसद का पौधा लाकर दें। इन पौधों की खूबसूरती आपके प्यार का आईना होगी।'

सुनते ही बच्चे कतार में उन पौधों की तरफ चल दिए। मेरे बच्चे भी एक-दूजे का हाथ थामें पौधा ढूंढ रहे थे। लाल-पीले-गुलाबी और न जाने कितने रंगों के फूलों वाले हरे-भरे सुंदर पौधों के छोटे-छोटे गमले सामने थे। सभी माता-पिता उत्सुकता से अपने बच्चों को देख रहे थे। जल्दी ही ज्यादातर बच्चे मनपसंद पौधा चुनकर अपनी ममा के लिए ले आए। कुछ ही क्षणों में मेरे बच्चों को छोड़कर सब बच्चे आ चुके थे। मेरी फिक्र बढ़ने लगी। क्या परेशानी हो सकती है एक पौधा चुनने में? फिर अश्विन के चेहरे पर मैंने मुस्कराहट देखी, उसे कुछ मिल गया। उसने गमलों की कतार में पीछे और लगभग छिपे रखे पौधे को उठाया, तो अन्वेषा भी सहमति में मुस्करा दी। दोनों उसे मेरे पास लाए और बोले-'हैप्पी मदर्स डे।' मैं पौधें को देखकर हैरान थी। इतने खूबसूरत पौधों के होते हुए भी बच्चे मेरे लिए एकदम मुरझाए हुए फूलों वाला बेहद कमज़ोर तने का पौधा क्यों लेकर आए?

पर उनके खुशी से भरे चेहरे देखकर मैंने तोहफे को हंसकर कुबूला। पर अपनी जिज्ञासा को रोक न पाई। 'इस कमज़ोर, मुरझाए पौधे को क्यों चुना'-मैंने पूछा। अश्विन ने जवाब दिया-'ममा इस पौधे को आपकी जरूरत है। आप ही इसे खिलाकर हरा-भरा कर सकती हैं। बेटे के मुंह से यह शब्द सुनकर मैं अपने आंसुओं को रोक नहीं पाई। मन ही मन धन्य-धन्य रही थी-मैं अपने बच्चों को सही संस्कार देने में सफल रही।

मां हैं तो घर है

(1) छह शादीशुदा आदमियों को बिना पत्नीयों के एक टापू पर छह हफतों के लिए छोड़ दिया गया। सब के घर में चार-चार बच्चे हैं। हर बच्चा एक खेल में भाग लेता है और एक हॉबी क्लास में जाता है, स्कूल जाने के अलावा हर पुरूष को चार-चार बच्चों का ध्यान रखना है। उनके लिए खाना बनाना, कपड़े धोना, होमवर्क चेक करना, पढ़ाई कराना, घर को साफ रखना और उनकी छोटी से छोटी खुशी का ख्याल रखना है।

बच्चे सो जाएं, तभी टीवी देख सकते हैं और हां, उसका रिमोट कब का टूट चुका है। साथ ही इन आदमियों को अपने आपको भी अपटूडेट रखना ज़रूरी है। साफ-सुथरे और सुन्दर। और छरहरे भी (नहीं तो प्रतिकूल कमेंट सुनने को मिल सकता है।)

इसके साथ हर हफ्ते उन्हें बच्चों की टीचर से मिलना होगा, जब बच्चे कहें उनके लिए छह लकड़ियों से झोपड़ी बनानी होगी, किसी के लिए गुड़िया के कपड़े, तो किसी के लिए कोई सांइस प्रोजेक्ट बनाना होगा। सोते समय कहानी सुनाना भी बच्चे की मर्ज़ी पर होगा। कोई बच्चा बिमार हो, तो पूरी रात उसकी तीमारदारी में जागना होगा, हर छोटे बच्चे को हाथ से खाना खाना भी सिखाना होगा।

ये पापा लोग जितना ध्यान रख पाएंगे,

उतने ही दिन टापू पर रह सकते हैं और यह तय करेगें बच्चे। अगर बच्चों का वोट उल्टा गया, तो पुरूष बाहर।

इन सब कर्तव्यों को हंसकर, पूरे मन और प्यार से अगर किसी ने पूरा कर लिया, तो वह विजेता कहलाएगा। अगर उसने इसे लगातार 18 - 25 सालों तक कर लिया तो वह मां कहलाने का अधिकारी होगा। दो ही हफतों में सारे पुरूष बाहर हो चुके थे। मांएं आ चुकी थीं, बच्चों को संभालने हमेशा के लिए.....।

मां के फर्ज़ जगह बदलने से नही बदलते, उसकी ममता वक़्त या उम्र की मोहताज नही है। मां तो जहां होती है, वहीं होता है पूरा घर, पूरा संसार।

शान मुकर जी आज पार्श्व गायन से जुड़ा जाना - माना नाम हैं। बकौल शान, 'बचपन से में अपनी मां का बेटा रहा हूँ। मैं तेरा साल का था जब पापा गुज़र गए। पर मां ने हिम्मत नही हारी। मुश्किल हालात में अडिग रहीं और हम पर उन परिस्थितियों की आंच भी नही आने दी। खुद भले ही अकेलेपन का सामना किया हो पर हमारे सामने उत्साह और उम्मीद से भरी रहती थीं। उन्होंने माता - पिता दोनों का प्यार देते हुए हमें बड़ा किया। पापा के जाने के बाद कठिन क्षणों में भी लोगों से किसी भी तरह की मदद लेने की ज़रूरत नही पड़ने दी। मां ने अपने सपनों को हमारे जरिए जीया है। उनकी सहनशक्ति, धैर्य और जिंदगी जीने के अपने खास तरीके से प्रभावित होकर ही मुझे उनके के जैसा बनने की प्रेरणा मिली। वो एक आदर्श मां है। जब और जहां उन्हें लगा कि मैं गलत हूँ, उन्होंने मुझे सुधारने में कोई कसर नहीं छोड़ी।'

'उन दिनों में लगभग रोज़ शराब पीकर घर आने लगा था। मां के मना करने पर भी जब मैं नहीं माना तों उन्होंने मुझपर हाथ उठा दिया। वो डरती थी कि कहीं मुझे पिता जी की तरह पीने की लत न पड़ जाए और इसीलिए उन्होंने ऐसा किया। अब मैं अपनी मां का अच्छा और आज्ञाकारी बेटा हूँ जो कभी भी, किसी भी वजह से उन्हे शर्मिदगी नहीं होने देता और वह भी जिंदगी के बड़े - छोटे फैसलों के लिए मुझपर विश्वास करती हैं।

सुनील पडवाल का नाम आज स्थापित चित्रकारों में लिया जाता हैं, वे कहते हैं, जब भी मैं मां के बारे में सोचता हूँ तो भगवान का ध्यान आता है। उनकी ज़बरदस्त आशावादिता और अद्‌भुत ताकत ने मुझे काफी प्रभावित किया है। मैं मां का शुक्रगुज़ार हूँ कि उन्होंने मुझे वही बनने दिया, जो मैं चाहता था और जब भी मुझे उनकी जरूरत पड़ी उन्हें अपने पास पाया। उनका शांत व्यक्तित्व और मन की शक्ति मुझे विस्मय में डाल देती है। बचपन से ही मैंने मां को दूसरी मांओ से हमेशा अलग पाया। उन्होंने कभी भी मुझे पढ़ने या होमवर्क करने के लिए नहीं कहा। रात को पढ़ने बैठता तो वे मुझे ज़बरदस्ती सोने भेज देती थी। मां की मेरी जिंदगी में बहुत ही अहम् भूमिका रही है। वे हमेशा मेरी गल्तियों को सुधारने के लिए मेरे साथ मौजूद रहीं हैं।'

'मुझे वो किस्सा अभी भी याद है। जब मैं पांचवी कक्षा में पढ़ता था। मैं और मां फुटपाथ पर चल रहे थे। इतने में देखा कि एक टैक्सीवाला ट्रैफिक जाम होने के बावजूद लगातार हॉर्न बजा रहा था। मैंने टैक्सीवाले की बेवकूफी पर जैसे ही टिप्पणी दी, मां ने तुरन्त कहा कि कभी किसी की परिस्थिति बिना जाने अपनी राय नहीं देनी चाहिए। हो सकता है वो ड्राइवर परेशान हो। मैंने दूसरों को समझने की मां की सीख गांठ बांध ली।

मां का अनुशासन

राखी गुलज़ार उक प्रसिद्ध हीरोईन है। उनकी बेटी मेघना गुलज़ार के अपने रोचक अनुभव अपनी मां के सम्बन्ध में इस प्रकार हैं :-

यह सच बहुत सहज नही, मगर सचमुच एक अर्से बाद मैं यह जान पाई कि मेरी मां एक मशहूर अदाकार हैं। मैं एक सेलिब्रिटी की बेटी हूँ। अपने अभिनय के लिए प्रतिष्ठि, बहु अयामी प्रतिभा की बेटी हूँ। मैं, 'राखी-गुलज़ार' की बेटी हूं।

वजह, बेशक यह रही कि उन्होंने मुझे कभी अपनी व्यस्तता का आभास नहीं होने दिया। वो मुझे ठीक वैसे ही अटेंड करती, जैसे मेरी और फ्रैंड्स की माएं उन्हें वक्त देतीं। वह मुझे वैसी ही साधारण लगती भी। मेरा स्कूल बैग जमाना। यूनीफ़ॉर्म सेट करना और लंच तैयार करने से लेकर होमवर्क चैक करने तक की सारी ज़िम्मेदारियां, मां पूरे मन से निभातीं। मुझे यह अहसास दिलाए ब़गैर कि उन्हें कभी काम पर जाना है, और वह भी वक़्त पर। अपनी किसी शूटिंग पर ले जाना तो दूर, घर में फिल्मों की बात तक नहीं करती, और न ही कोई फ़िल्मी मैगज़ीन लाती। मेरा पूरा ध्यान पढ़ाई पर रहे, इसमें कोई कोर-कसर मां नही छोड़ती थीं।

होश संभाला तो ख़ुद को मां के आसपास डोलती एक अंतर्मुखी लड़की के रूप में पाया। जीवन का बड़ा हिस्सा उनके साथ रहते हुए बीता। उन्होंने अनुशासन के दायरे तय किए लेकिन मेरी फ्रीडम का भी बराबर ख़्याल रखा। इसलिए डिसिप्लिन का ख़ौफ और आज़ादी का सुख, सारा कुछ मां के ईद-गिर्द ही रहा। यह बात और है कि मेरी फ़र्माइशें पूरी करकर के मुझे बिगाड़नें का काम पापा ने ब़खूबी संभाल रखा था।

आज, कुछ देखने और कुछ-कुछ समझ पाने वाली उम्र की सीढ़ी पर हूँ। आज, लगता है कि कितना कुछ था जो वो मुझे दे सकती थीं, मगर उन्होंने जानबूझ कर नही दिया। यह जो उनका नहीं देना है, दरअसल उसी ने सब कुछ दिया मुझे। एक बिल्कुल साधारण लड़की की तरह जीना। लोकल ट्रेन से कॉलेज जाना-आना। ख़ुद को चकाचौंध से दूर रखना। सादगी से रहना। आजादी और मर्यादा के संतुलन को समझना।

मुझसे एक ऐसी लड़की तैयार करना जो अपनी पहचान आप बना सके। इस सारी तैयारी के पीछे अब मुझे अपनी मां के वो हाथ दिखते हैं जो घड़ा बनाते व़क्त, शिल्पी के हुआ करते हैं। एक बाहर से चोट करता हुआ और दूसरा भीतर से सहारा देता हुआ।

हमारी क्रिएटीविटी में आसपास का वातावरण ज़्यादा काम करता है। वो हमारे सबकॉन्शस में चुपचाप जगह बनाता है और हमें ख़बर भी नही होती। मेरे साथ भी यही हुआ। डायरेक्शन में आई तो यह बातें उभरीं कि मैं पिता के स्कूल से प्रभावित हूँ। जबकि मेरी फ़िल्म में वो किरदार हैं जो मेरी मां निभाती रहीं। मगर, अफ़सोस, इस ओर कम लोगों का ध्यान गया। एक पिता और लेखक की हैसियत से पापा मेरे आदर्श हैं। मगर फिर भी मैं उनके साथ स्क्रिपट पर काम नहीं कर सकती। क्योंकि हम दोनों के सोचने की दिशाएं अलग-अलग जाती हैं। मैं एक्टिंग में चली जाती, तो मुझे राखी जी से जोड़कर देखा जाता, क्योंकि जो समय उनके साथ गुज़ारा, जो अनुभव उनके साथ जीए, मैं अपने आप में उनकी गहरी छाप पाती हूँ। जिस तरह के करैक्टर मम्मी प्ले करती रही हैं, मेरी स्क्रिप्ट में वो किरदार सहज ही झांकने लगते हैं। मैंने परोक्ष ही सही, कई जगह उनके व्यक्तित्व को रेखांकित किया है। आज मैं अपने परिवार के साथ हूँ, मगर मां से मिला अनुशासन यह भी मेरे साथ है।

बरसी की सभा

28 जनवरी को विशेष सम्मान के योग्य डाक्टर इकबाल सिंह जी के सम्बन्ध में बरसी की सभा उनके घर 28 सैक्टर में करवाई गई, जिसमें उनके बेटे, बेटीयां व उनके सब परिवारिक जन बहुत सम्मान पूर्वक शामिल हुए।

सर्वप्रथम गुरू महाराज की छवि का अर्चन किया गया और फिर डाक्टर साहिब की फोटो पर हार व फूल सब परिवारिक जनों ने चढ़ाए।

"श्रद्धेय भाजन माता पिता जी" नामक भजन का गान किया गया" फिर परलोक के सम्बन्धियों को हम नहीं बिसरांएगे" नामक भजन गाया गया।

उसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने ब्यान किया कि मनुष्य 5 पक्षों में बिलकुल अन्धे हैं। पहला दूसरों के गुणों को देखने के विचार से, दूसरा दूसरों के उपकारों को देखने के विचार से, तीसरा अपनी गल्तियों को देखने, चौथा दूसरों के दुखों को अनुभव करने और पांचवा हमें कौन चलाता है, इसके विचार से हम अन्धे हैं। उसके बाद उन्होंने बताया कि मनुष्य को उसके सुख के आकर्षण चलाते हैं, इसी कारण हम भले मार्ग पर चलने में असमर्थ होते हैं। डाक्टर जी ने गुरू महाराज की शरण को पाकर क्या-क्या बरकतें पाई और उनकी यही तड़प थी कि उनका परिवार गुरू महाराज से जुड़े, तभी सब का भला है। सारा ब्यान बहुत जाग्रित करने वाला था।

उसके बाद उनकी बड़ी बेटी सुरजीत बराड़ ने बड़ी व्याकुलता से ब्यान किया कि हम यहां जितने परिवार बैठे हैं, उन सबका गुरू महाराज से जुड़कर अथाह भला हुआ है, हम इसको समझे या न समझें, परन्तु पिता जी इसको बहुत ही गहराई से समझते थे और उन्होंने आप बचकर दूसरों को बचाने का काम किया, श्रीमान रूप चन्द जी, श्रीमान सुरजन सिंह जी, श्रीमान गुरूबचन सिंह जी, ठाना सिंह जी, अवतार सिंह जी, पता नहीं कितने परिवारों को उन्होने बचाया और गुरू महाराज के संग जोड़ा उनके अन्दर दूसरों का भला करने की तड़प थी। हमें गर्व है कि हम ऐसे पिता की सन्तान हैं। उनको श्रद्धांजली हम इस संगत से जुड़कर ही दे सकते हैं। यह ब्यान भी बहुत गहराई से अनुभव करके किया, जो सबको प्रभावित कर रहा था।

फिर श्रीमान निर्मल सिंह जी ने ब्यान किया कि पिता जी का सबसे बड़कर उपकार यही है कि उन्होने परिवार को ऐसे निराले गुरू से जोड़ दिया, इस उपकार का बदला नही चुकाया जा सकता, उन्होंने हमेशा गुरू के लिए अटूट श्रद्धा रखी, किसी भी हालात में श्रद्धा को डोलने नहीं दिया। हम यदि अपने बच्चों को ऐसे गुरू से जोड़ जाएं, तो बरकतें ही बरकतें हैं। उनका ब्यान भी बहुत दिलों को प्रभावित कर रहा था।

उसके बाद उनकी छोटी बेटी सतिन्द्र ढिल्लों ने भी अपना सौभाग्य वर्णन किया कि ऐसे पिता, जो अनथक मेहनती थे और वह गुण वह हमें दे गए। दूसरा सदा दूसरों की सेवा के लिए प्रेरित करते थे, मैं उनके बताए मार्ग पर चलने की कोशिश करती हूँ और गुरू महाराज की शरण हमें दे गए यह हमारा सौभाग्य हैं। उनका दिल भी भरा हुआ था।

उसके बाद उनके बड़े बेटे सरल ने भरे दिल से पिता जी की चन्द बातें बताई। सारा वातावरण बहुत ही प्रभावशाली बन गया। पिता जी की बड़ी पोती की बेटी ने पिता जी की यादें बताई। छोटी सी बच्ची भी उन्हें याद करके रो रही थी। उसके बाद 2000 रू उनकी याद में दान में दिए। और बच्चों को हर माह एक नीति शिक्षा की सभा करवाने का सकंल्प किया। बाद में सब को भोजन खिलाया गया।

(एक हाज़रीन)

चण्डीगढ़ में माता पिता सम्बन्धी विशेष सभा

यह सभा श्रीमान Dr. Khera Sahib जी के यहाँ 18 जनवरी के दिन रखी गई। सबसे पहले एक भजन का गान किया गया। उसके बाद देवस्तोत्र का गान व व्याख्या की गई। उसके बाद फिर एक भजन का गान किया गया। श्रद्धा भाजन माता-पिता जी, श्रद्धा भाव करूं उपहार। सभा में फरमाया गया कि इन्सान पशुओं से विकसित हुआ है। पशुओं के अन्दर जीने, खाने व पीने की भावना इतनी बढ़ कर है कि इसके इलावा उनको कोई बात समझ में नहीं आती। हमारे मां बाप का क्या हाल है, उनको सम्भालना है, पशुओं की तरह हमें भी इसका कुछ पता नहीं हैं। पशुओं को सम्बन्धों में जीना नहीं आता। उनमें Kill whom you can, take what you can अर्थात जंगल राज रहता है। हम भी पशुओं की तरह सम्बन्धों को जानना नहीं चाहते व सम्बन्धों में जीना नहीं जानते, इस जंगली अवस्था में मानवता का विकास नहीं हो सकता। जब तक यह नहीं जानेंगे कि दूसरों ने हमारे लिए क्या किया है, उनकी कुर्बानियाँ क्या हैं? माता-पिता कैसे तड़पते है, कैसी उनकी बुरी हालत होती है, ऐसी अवस्था को देखकर भगवान देवात्मा तड़प उठते थे। भगवान देवात्मा ने हम अन्धकार वासी मनुष्यों को रोशनी दी है कि मनुष्य का सम्बन्ध दूसरों के साथ स्वार्थ का सम्बन्ध है। जब तक हम माता-पिता से उपकार पाते रहते है उनसे जुड़े रहते है। जब स्वार्थ पूरा नहीं होता, हमारे सम्बन्ध फीके पड़ जाते हैं, या ख़त्म हो जाते है? भगवान फरमाते है सम्बन्धों में स्वार्थ से जुड़कर हम अपने जीवन का नाश करते है। उच्च भावों के साथ दूसरों के साथ सम्बन्ध जोड़ने से ही हमारा कल्याण हो सकता है। माता-पिता के साथ सम्बन्ध शुक्रगुजारी, हमदर्दी सम्मान आदि के श्रद्धा भावों से होना चाहिए। भगवान ने इन सम्बन्धों की न केवल शिक्षा दी है परन्तु नाशुक्रगुजारों को, पापाचारीयों को, माता-पिता का अपमान करने वालों को शुक्रगुजार बनाया है। अगर भगवान ऐसी अद्वितीय शिक्षा न देते तो हम माता-पिता के सम्बन्ध में क्या होते? गुरू महाराज ने सम्बन्धों में Ideal जीवन जीया है। ऐसी Ideal Life की जिसकी कल्पना मनुष्य मात्र के लिए सम्भव नहीं। गुरू महाराज जी ने किस प्रकार अपने माता-पिता की सेवा की उनके दुःख सुख में उनका ख्याल रखा, उसको शब्दों में ब्यान करना मुशकिल है। माता-पिता की पैतृक सम्पत्ति में एक पैसा भी नही लिया। अपनी पढ़ाई के लिए माता-पिता पर बोझ नहीं डाला। दो सालों में सिर्फ 50रू ही लिए, सारा खर्चा अपने स्थाई फंड से निकाला। महाराज अपने श्रद्धेय पिता जी के चरण धोकर चरण अमृत लेते थे। गुरू महाराज अपने माता-पिता की सेवा के लिए व्याकुल हो जाते थे। हमें ऐसे गुरू के शिष्य होकर अपने सम्बन्धों में स्वर्ग लाभ करना है। उच्च भावों से भरकर उनकी सेवा करनी है। शुक्रगुजार साबित होकर दिखाना चाहिए। एक घटना सुनाई गई कि एक पीरवार में एक बाप बिमार पड़ गया। सारा घर बिक गया। सामान सब कुछ बिक गया। रहने के लिए घर किराए पर लेना पड़ा। डाक्टर ने उस बिमार बाप को चावल व दूध पीने को कहा। माता जी ने बड़ी मुश्किल से चावल व दूध का इन्तज़ाम किया। उस बुजुरग बाप ने दुख से भरकर खाने से इन्कार कर दिया कि अगर बाकी Family members भूखे है तो मैं कैसे खा सकता हूँ।

इस संसार में एक-एक जन ने एक-एक पक्ष में बड़ा बेहतर काम किया है। परन्तु शुक्रगुजार बच्चे बनाने का काम किसी ने नही किया।

हम कैसे ऐसे देवगुरू को धन्यवाद दें जिन्होंने एक-एक जन, जो नाशुक्रेपन का जीवन जी रहे थे, शुक्रगुजार बनाया है। हमें एक बात याद रखनी चाहिए कि Parents can do no wrong अगर ऐसी अवस्था में रहें तो हमारा जीवन सफल होगा। गुरू महाराज ने एक-एक अधिकारी जन के अन्दर उनके माता-पिता के साथ बुरे व्यवहारों के प्रति घृणा पैदा कर दी। क्षमा याचना करने के लिए मजबूर कर दिया। नाशुक्रे बेटों से वफादार कुते ज्यादा मददगार साबित होते हैं। भगवान की रोशनी हमें दिखाती है कि माता-पिता का क्या स्थान है हमारे जीवन में। श्रीमान शादी लाल की घटना सुनाई गई कि कैसे भगवान ने उनको श्रवण कुमार बना दिया।

देवात्मा सतगुरू ने ऐसा बेटा बना दिए कि जो माता-पिता से 27 साल तक ऊंचा नहीं बोला और कहते है कि माता-पिता तो पास हो गए, First division से पास हो गए, यदि मैं अपनी तरफ से उनकी सेवा करने में पास हो गया तो जीवन सफल हो जाएगा।

हमारा बच्चों की तरफ तो ख्याल जाता है परन्तु माता-पिता जो इस दुनियां में जिंदा हैं उनकी तरफ ध्यान नहीं जाता। काश हम ऐसे माता-पिता के गुणों व उपकारों को, सामने लाकर सच्चे सेवाकारी साबित हो सकें। सभा बहुत ही हृदय स्पर्शी थी। अधिकांश जन आंखों से आसूँ बहा रहे थे। इसके बाद कुछ लोगों ने अपने भावों का प्रकाश किया जो इस प्रकार हैं-

भाव प्रकाश

श्रीमान V.K.Agnihotri Sahib Ji: मुझे ऐसे विशेष मंडल में आने का सौभाग्य मिला। ऐसी हृदयस्पर्शी सभा को सुन कर मेरा हृदय रो रहा था। मेरी श्रद्धेय माता जी (रो-रो-कर) ने जो हमारे लिए कुर्बानी दी है। उसका कर्ज़ा कभी चुकाया नही जा सकता। जब मैं 7 साल का था तो पिता जी चल बसे। श्रद्धेय माता जी ने बड़े दुःखों से गुज़रकर हमारी पालना की है। मैं तो उनके चरणों में सुबह उठते ही प्रणाम किया करता था। श्रद्धेय माता जी अन्तिम सांस तक मेरे साथ ही रही व मुझे उनकी सेवा करने का सौभाग्य मिलता रहा।

श्री सुनील दता जी:- आप ने आपने पिता जी के उपकारों का भाव विभोर होकर जारो कतार रोते हुए वर्णन किया। पत्नी की बीमारी में दो विशेष उपकारियों की बड़ी मारी सहायता का ब्यान कियेा। अपनी माता के बेपनाह उपकारों का स्मरण करते हुए व उन्हे धन्यवाद देते थकते नहीं थे। उनके सम्बन्ध में अपनी अवज्ञाओं पर भी बहुत गहराई के साथ दुःख महसूस कर रहे थे। उनके ब्यान से सारा वातावरण ही गरमा गया। बहुत से हृदय भर रहे थे।

श्रीमान चमन लाल जी:-मेरा इस संगत में बहुत हित हुआ है। मुझे अब माता-पिता की मेहरबानियां नज़र आने लगी हैं। उन्होंने हमारी रक्षा के लिए दिन रात एक कर के हमें पाला-पोसा हैं। हमारे एक भाई की पहाड़ से गिर कर मौत हो गई थी। पिता जी ने हमारे भले के लिए ऊपर के इलाके से जमीन-जायदाद बेचकर नीचे खरीद लीं। हालांकि हमें नीचे की जमीन खरीदने में बहुत घाटा पड़ा। नीचे वाली जमीन अच्छी नही मिली। लेकिन पिता जी ने हमारे भले के लिए किसी चीज की परवाह नही की। उनके उपकार नज़र आकर हृदय भर आता है। माता-पिता जी ने अपनी परवाह न करके, अपने सुख-दुख का ख्याल न करते हुए, हमें अपने पैरों पर खड़े होने के लिए दिल-तोड़ प्रयास किया है। अब उन्हे प्रणाम करने लगा हूँ उनकी कुर्बानियां किसी अंश सामने आकर हृदय को झुकाती है काश। मैं उनके उपकारों को सामने

लाकर उन्की ज्यादा से ज्यादा सेवा कर सकूं।

श्रीमान सुखदेव सिंह जी:-मेरा बहुत ही बड़ा दुर्भाग्य रहा कि मैं अपने ऐसे नेक माता-पिता को सही पहचान नही सका। उनका निरादर करने वाला साबित होता रहा हूँ। माता-पिता जी ने अपने सुख-दुख को भूलकर हमारे लिए जो कुछ किया है, उसका शब्दों में ब्यान करना मुश्किल है। मैं समाज में आकर भी पिता जी को वह सम्मान देना तो दूर रहा उनका अपमान किया है। एक बार पिता जी ने किसी को loan दिलवा दिया। उन्होने भरा नही वह पैसे बैंक वालों ने हमारे Account से काट लिए। मैं अपनी नीच जुबान से पिता जी को ऊंचा बोल गया कि आप जिसको चाहते हैं loan दिलवाते रहते हैं। मैं अपनी नीच प्रकृति के कारण यह भूल गया था कि पिता जी ने खेतों में खून पसीना एक कर के हमें पाला है, पढ़ाया है। हम भाईयों को पढाने के लिए अध्यापक को पहले ही रूपए दे आते थे कि जब हम स्कूल जाएं तो अध्यापक हमें थोड़े थोड़े कर के पैसे देता रहे जिसके कारण शुरू से स्कूल जाने की आदत पड़ जाए। मैंने माता-पिता को कभी माता-पिता समझा ही नहीं। उनके दु:ख को कभी अपना दु:ख नहीं समझा। आप मुझे वह सीन सामने आ रहा है कि पिता जी ने आज कल जैसी ठंडी रातो में खेंतो में फसलों का पानी लगाकर हमारी पालना की है। थ्रेशर में गेहूँ निकालते-निकालते उनके हाथों में खून बह उठता था। खुद सादा खान-पान करके आपने अपनी योग्याताओं से ज्यादा हमें Facilities दी है। मैंने उनके खून-पसीने की कमाई Misuse की है। उन्होंने घर में पैसे न होने पर भी पढ़ाई के लिए फीसें माँग कर भी दी हैं। मैं अपनी जरूरत से ज्यादा खर्च करता रहा हूँ। जब मैं 1999 में सेवक बना था तो उससे पहले मेरे साथी-सेवक कहा करते थे कि आपके माता-पिता बहुत ही नेक व ईमानदार हैं। उनको प्रणाम किया करें तो मैं उन्हे कहा करता था कि बाकी सब कुछ कर सकता हूँ परन्तु माता-पिता को प्रणाम करना मेरे लिए असम्भव हैं। अब उनके एक-एक उपकार सामने आ कर हृदय को हिला रहे हैं। अगर आप की विशेष कृपा मुझ पर न होती तो मैं किस दुनियां का वासी होता। उन्होंने अपनी योग्यताओं से बढ़कर मुझे उस हालात के अनुसार अच्छे से अच्छे स्कूलों में पढ़ाया। अब प्रणाम तो करने लग गया हूँ पर वह भी बन्दर सलाम हैं। उनको प्रणाम करते समय उनकी वह कुर्बानियां जो उन्होंने मुझ पर की है सामने नही आती, उनका उच्च जीवन सामने नही आता। पिता जी ने किसी की अमानत या रुपए कभी नही रखे। अपने जीवन में ईमानदारी, पवित्रता के मिशाले दी हैं। साधू जीवन बिताया है। आज मैं जो कुछ भी हूँ उनकी कृपा के कारण हूँ। काश। मैं अपने ऐसे साधु माता-पिता को पहचान कर व उनके लिए अपमान जनक न बनकर उनके लिए ज्यादा से ज्यादा सेवाकारी बन सकूं।

कशिश जी(बेटी श्रीमान दत्ता साहिब जी):-मेरे पिता जी के मुझ पर बहुत ही उपकार हैं (रो-रोकर)। उन्होंने मुझे माता-पिता दोनों का प्यार दिया है। आप ने मेरी माता जी की बहुत सेवा की है। जब मैं स्कूल में जाती थी तो आप माता जी के कपड़े धोया करते थे। मैंने एक दिन भी धोने चाहे तो मुझे उसे धोते हुए अच्छा नहीं लगा। (आप का हृदय बहुत ही भरा हुआ था। जारो-कतार रो रो कर)। आप ने अपने पिता जी के चरणों में गिर कर रो-रोकर प्रणाम किया।

श्रीमती निशा जी (श्रीमान चमन जी की

पत्नी) मेरा इस सभा में बैठ कर बहुत भला हुआ है। माता-पिता जी के उपकार नज़र आ रहे हैं। भाई साहिब व माता जी (श्रीमति विद्या वती जी) के कारण हमें इस सभाओं में शमिल होने का अधिकार मिला हुआ है। इनकी कुपा से हमारे बच्चे अच्छी जगह पढ़ रहे हैं। किसी चीज की कोई कमी नही है। रहने-खाने की अच्छी व्यवस्था हैं। मैं इनसे (अपने पति से) झगड़ती हूँ, उन्हें तंग करती हूँ, वापिस जाने को कहती हूँ। मैं आगे से कोशिश करूंगी कि उनसे ऐसा न करूं। (रो-रो कर) मुझे डर लगा रहता है कि ऐसे सुन्दर व अच्छे सभा की माहौल से कही दूर न चली जांऊ।

इसके बाद जो-जो जन उपस्थित थे उन्होंने भरे हृदय से (कईयों ने जारो-कतार रो-रो-कर अपने वहां उपस्थित माता-पिता के चरणों में गिर करके उनको प्रणाम का साधन किया और गले में हार डाल कर माता-पिता का सम्मान किया बहुत ही धार्मिक वातावरण बन रहा था। इसके बाद चार-बार जय ध्वनि के साथ यह सभा सम्पन्न हुई।

(एक हाजरीन)

शुभ संग्राम

चण्डीगढ़ : 6 दिसम्बर, रविवार को श्री मान बलदेव सिंह जी ने साधन करवाया अच्छी संख्या में हाज़री थी। गुरू महाराज जी का फोटो द्वारा फूल रख कर अर्चन किया गया। देव स्त्रोत का गान व व्याख्या की गई। फिर प्रार्थना की गई। सभा में बताया गया कि सुख अनुरागी मनुष्य का कोई भविष्य नहीं होता। वह दुखमय होने, हानि उठाने व नाश को प्राप्त होने के लिए बेबस व मजबूर है। परम् पूज्यनीय भगवान देवात्मा के अद्वितीय प्रभावों से ही मनुष्य का भविष्य उज्जवल हो सकता है। इस सभा के बाद श्रीमान जी प्रचार के लिए रवाना हो गऐ। श्रीमान सुखदेव सिंह जी भी साथ थे वह दोनों संगरूर होते हुए शाम तक मल्लेकां पहुंच गये।

मल्लेकां : यहां पर रात को 8 बजे पहली सभा की गई। केसुपुरा से साथी भी सभा के लिए पहुंच गये। लगभग 40-50 के करीब जन आकर इस सभा में शामिल हुए। सभा में बताया गया कि जैसे पशुओं को अपने पैरों में पड़े हुए या फसे हुए सींग का न तो कारण मालूम पड़ता है और न ही उसे छुटकारा पाने की कोई तरकीब मालूम पड़ती है। उसी तरह मनुष्य सब दुखी हैं परन्तु मनुष्य को न तो अपने दुखों का कारण समझ में आता है और न ही उससे छुटकारा पाने का पता लगता है। वह धार्मिक स्थानों में जाकर परमात्मा को या देवी-देवताओं को प्रार्थना करता है परन्तु इससे न तो दुख घटता है और न ही दुख दूर हो जाता है। उपरोक्त प्रार्थना की दवाई फ़जूल व बेकार है। मक्के में हज करते हुए लोगों की मौतें हो जाती है। देवी की यात्रा करते हुए बसें पलट जाती हैं मौतें हो जाती है। देवात्मा अपनी रोशनी में दिखाते हैं कि मनुष्य के दुख उसके नीच सुखों के प्रति आकर्षण के कारण हैं। वह आकर्षण भी मनुष्य अपने आप नही देख सकता। देवात्मा मनुष्यों को अपनी रोशनी देकर उसके नीच आकर्षण उज्जवल करते हैं वह अपनी अद्भुत शक्ति द्वारा उन आकर्षणों से अधिकारी आत्माओं को मुक्त करते हैं व मनुष्य

के दुख दूर करते हैं। कुछ परिवर्तनों को श्रद्धा भाव से भरकर बताया गया। हाजरीन बहुत प्रभावित हो रहे थे। संगत का अवसर पाकर ध न्य-धन्य हो रहे थे व गुरू महाराज को धन्यवाद दे रहे थे।

7 नवम्बर की सुबह की सभा में केवल 18-20 जन आकर शामिल हुए। इस सभा में बताया गया कि मनुष्य आखें रख कर और मानसिक शक्तियां रखकर भी व अच्छी पढ़ाई करके भी, डाक्टर, इन्जनियर बनकर भी, योग्य होकर भी अन्धेरे में रहता है। खुराक सम्बन्धी अन्धेरा, सेहत सम्बन्धी अन्धेरा, कमाई सबन्धी अन्धेरा, धन सम्बन्धी अन्धेरा, लक्ष्य सम्बन्धी अन्धेरों का ब्यान किया गया। अन्धेरों की भयानक हानियां ब्यान की गई। जिससे हाजरीन प्रभावित हो रहे थे व उनका ध्यान अपनी तरफ जा रहा था।

रात की सभा में 40-50 जन आकर शमिल हुए। इसमें सूक्ष्म प्रभावों की दुनियां को हाजरीन को समझाने की कोशिश की गई। सूक्ष्म प्रभाव कैसे मनुष्य जीवन को प्रभावित करते हैं, यह समझाया गया। देवात्मा के अद्वितीय देवरूप, शुभ अनुरागी व सत्य अनुरागी रूप के बारे में समझाया गया। उन अनुरागों से पैदा हुई, देव-ज्योति व देव-तेज के बारे में समझाया गया। कैसे देवात्मा का रूप एक रूहानी सूरज का रूप है। उनकी शरण प्राप्त करना व उनके प्रभावों की प्राप्ति में ज़्यादा से ज़्यादा योग देना, मनुष्य का कैसा परम सौभाग्य है, उसके बारे में बताया गया। स्वामी गोविन्दराम जी, श्रीमान बलकार सिंह जी, श्रीमान जगदीश जी व अन्य जीवन परिवर्तन पुकार-पुकार कर शहादत देते हैं कि कैसे देवात्मा अद्वितीय रूहानी सूरज हैं। सभापति जी ने अपना दृष्टांत पेश किया कि कैसे देवात्मा ने नीच अवस्था को बदल कर जीवन सफलता के मार्ग पर डाला है। सभापति जी ने अपने सौभाग्य का वर्णन किया। सभा काफी प्रभावशाली बन रही थी।

8 नवम्बर की सुबह की सभा में 25-30 जन आकर शामिल हुए। इस सभा में सभापति जी ने बताया कि मनुष्य को कैसे उसके सुख अनुराग चला रहे हैं। अपने सुख अनुरागों का प्रकृत ज्ञान प्राप्त करना, उनसे मुक्त होना ही ध र्म है। उच्च भाव पैदा करके दूसरों के भले के लिए काम आना ही धर्म है। इससे मनुष्यों की दुखों व बर्बादियों से रक्षा सम्भव हैं। इससे ही आत्मा का लोक परलोक में भला सम्भव है। कोई पाठ-पूजा करना व करवाना धर्म नहीं हैं। उचित ज़िन्दा उदाहरणों द्वारा इस सच्चाई को पेश किया व समझाया गया कि कैसे मनुष्य अपने सुख लालसाओं के प्रति अविवेकी वा बेसुध रहकर बरबाद होता है।

रात को फिर एक सभा की गई। जिसमें 50-60 जन आकर शामिल हुए। इसमें गुरू महाराज का सम्बधों को स्वर्गीय बनाने का कारज बताया गया। श्रवन कुमार जैसे बेटे जो गुरू महाराज जी ने बनाये हैं उनके उदाहरण पेश किये गये। सगे भाईयों के स्वर्गीय सम्बन्ध, पति-पत्नी के मीठे सम्बन्ध व उनके वफादारी वा सत्कार के भरे सम्बन्ध जो गुरू महाराज जी ने बनाये हैं उनकी गाथा श्रद्धापूर्वक बताई गई। अच्छा मण्डल बन रहा था कई जनों की आंखों में पाक आंसु बह रहे थे व उनके हृदय गुरू महाराज जी के आगे झुक रहे थे।

9 तारीख की सभा यहां की आख़िरी सभा थी। इसमें 40-50 जन आकर शामिल हुए। इस सभा में बताया गया कि धर्म का विषय बहुत ही बारीक व उच्च है इसको समझने के लिए अच्छे दिमाग के साथ साथ अच्छे हृदय की भी जरूरत है। दो बातों का यदि मनुष्य ख्याल रखकर चले तो अवश्य उसका कुछ न कुछ भला हो सकेगा, चाहे धर्म के तत्व ज्ञान की उसको कोई भी समझ न हो। एक तो मनुष्य प्रकृती सुख अनुरागी होने के कारण प्रत्येक मनुष्य नीच बनने के लिए बेबस है। हम सब नीच हैं। नीचता के ढेर हैं। अपनी नीचता को ज़्यादा से ज़्यादा देखना व समझना व उससे निकलने का ज़्यादा से ज़्यादा यत्न करने में ही हमारा भला है। दूसरी बात अपने से निकलकर दूसरों के काम आवें। दीन-दुखियों की सेवा करें। जिसके जीवन से दूसरों के लिए कुछ नही निकलता वह खाली ही रहते हैं। सभा बहुत ही प्रभावशाली थी हाजरीन बहुत ही प्रभावित हो रहे थे। 800 रूपये के करीब दान प्राप्त हुआ। इस प्रकार यहां का संग्राम किसी न किसी अंश सफल रहा। इसके बाद श्रीमान जी पदमपुर के लिए रवाना हो गये।

पदमपुर: यहां अपने मन्दिर में पहली सभा 9 तारीख की रात को रखी गई। 25 के करीब हाज़िरी हो गई थी। इस सभा में बताया गया कि मनुष्य कैसे पैदा हुआ है। उसको शुरू में ही मुश्किलों का सामना करना पड़ा। धर्म कैसे आरम्भ हुआ? इन मुश्किलों व खतरों से बचने के लिए प्रार्थना शुरू हुई। नदियों, आग, सांपों, पेड़ों, रोगों, हवा-पानी आदि के देवते मान लिये गये। फिर सबसे बढ़ देवता परमात्मा को माना गया। उपरोक्त मुसीबतों से बचने के लिए पूजा-पाठ व प्रार्थना आदि आरम्भ हुए। अब भी देवी-देवताओं की पूजा की जाती हैं परन्तु उन मुसीबतों पर विज्ञान ने काफी हद तक रोक लगा दी है। फिर भी सांसारिक मुसीबतों के लिए पूजा-पाठ हो रहे हैं। धन के लिए, बेटे के लिए, दुख के लिए, रोग के लिए, मुकदमें के लिए, कलेश के लिए, जीत के लिए अभी पूजा हो रही है। नाम जपे जा रहें है, सिमरन हो रहें हैं, परन्तु इस पूजा के साथ-साथ मनुष्य के अन्दर भयानक रूहानी सुखों के अनुराग बढ़ रहे हैं। वह तबाही पैदा कर रहें हैं। इन्सानी पूजा उनका इलाज नहीं कर रही। मनुष्य दुख व विनाश के बड़ी मात्रा में शिकार हो रहें हैं।

10 नवम्बर सुबह की सभा में 25 के करीब जन आकर शामिल हुए। इसमें बताया गया कि विज्ञान क्या है? विज्ञान मनुष्य के जिस पहलू में अपना हाथ बढ़ा रहा है वहां नई रोशनी, नया ज्ञान, नई बरकतें, नये लाभ प्रदान कर रहा है। धर्म की विज्ञान के साथ लड़ाई रही। क्योंकि धर्म के थोथे झूठों का ज्ञान पोल खोलता है। ध र्म संसार की व इन्सान की उत्पत्ति मानते हैं कि परमात्मा के कहने से उत्पत्ति हुई। विज्ञान Creation का विरोधी है व विकास समर्थक है। धर्म में कल्पना, भम्र आदि शिक्षा की भरमार है। विज्ञान ने अन्धेरा दूर करना शुरू किया है। इन्सान मानने को तैयार नहीं कि कुंवारी के पेट से अपने आप बच्चा पैदा हो गया। नाम जपने से दुख अपने-आप चले जाते हैं। करामातें सम्भव हैं। इसके लिए टकराहट रही। इसके लिए वैज्ञानिक जलाये गये व मारे गये। उसके लिए अब माफी मांगी गई व उनको सत्य माना गया। देवात्मा ने विज्ञान के आधार पर नये विज्ञानमूलक धर्म की

खोज की है जो सारे विश्व के लिए एक है। इस देव धर्म का ज्ञान पाना व उसके साथ जुड़कर अंधकार व पापों से बचना, उच्च व सेवाकारी बनना मनुष्य के लिए परम सौभाग्य है।

रात को सभा में 50-55 के करीब हाज़िरी थी। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी भी इस सभा से पहले पहुंच गये थे। इस सभा में बताया गया कि मनुष्य जो कुछ भी करता है वह सुख के लिए करता है परन्तु मनुष्य है दुखी। मनुष्य के दुखों का कारण उसके स्वभाव के अन्दर है। मनुष्य को अपनी प्रकृति का ज्ञान नहीं इसलिए वे दुखी हैं। देवात्मा मनुष्य को उसकी प्रकृति दिखाते हैं व उसके दोष दिखाकर अधिकारी मनुष्यों को उससे निकालते हैं। देवात्मा की शरण मनुष्य का सबसे बड़ा सौभाग्य है।

11 नवम्बर की सुबह की सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। इसमें 24-25 जनों की हाज़िरी थी। 6-7 स्त्रियां भी थी। सभा में बताया गया कि धर्म क्या है? धर्म अच्छे बनने का नाम है, उच्च जीवन का नाम है। हमें उच्च बनना चाहिए। यह लक्ष्य हमेशा सामने रखना चाहिए व इसको कभी भूलना नहीं चाहिए। यह परखते रहना चाहिए कि मैं पहले से अच्छा बन रहा हूँ? इसको हमेशा देखते रहना चाहिए वैसे तस्सली नहीं पानी चाहिए। अच्छे बनने का कैसे पता लगता है? वह अच्छा है जो अच्छा व्यवहार करता है। अच्छा व्यवहार करने का नाम ही ध र्म है। अच्छा व्यवहार कौन कर सकता है? अच्छा व्यवहार कैसे करेगा? उच्च जीवन ध ारियों की संगत से। यह सभा बहुत प्रभावशाली रही।

माता-पिता को अच्छे सलूक देने से हम अच्छे बेटे बन सकते हैं। ऐसे जन की संगत को पाकर और कितने ही जन माता-पिता के साथ अच्छे व्यवहार करने लग जाते हैं। कई नये जन आकर इसमें शामिल हुए।

11 तारीख की रात की सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई थी। इस सभा में 45 के करीब स्त्री पुरूष शामिल हुए। सभापति जी ने इस सच्चाई को पेश करने की कोशिश की कि इन्सान के लिए सबसे ऊंचा प्यार भरा निस्वार्थ, जान कुर्बान करने वाला सम्बन्ध मां-बाप का है। हम सबसे खराब व्यवहार उनको ही देते है। उनको ही सताते है। सबसे ऊंचा रूप है जिनका परन्तु उनके साथ व्यवहार बहुत ही घृणित हैं। हमारे व्यवहार हमें अपने आप नज़र नहीं आते। परम-पूज्यनीय देवात्मा की ज्योति ही हमें हमारे प्रकृत नीच हालात को दिखाती है व ठीक मार्ग पर चलाती है। डा. साहिब मुनसा सिंह जी ने खड़े होकर बताया कि कैसे इस ज्योति में अपनी नीचता दिखाई दी है व किसी अंश उससे निकाला है, यह ज्योति केवल और केवल देवात्मा के पास है। इसके इलावा और कहीं भी नहीं है। इसलिए और कहीं अपनी कमजोरियां व गलतियां दिखाई नही देती। चाहे कोई भी कहलाने वाला बड़ा धर्म क्यों न हो।

12.11.05 की सुबह की सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इस सभा में 25-28 के करीब जन आकर शामिल हुए। इसमें बताया गया कि दुनियां दुखों का घर है। इसका कारण क्या है? अज्ञानता, अन्धकार व बेसमझी। अन्धे मनुष्य का जीवन दुखमय होता है। क्या आंखें रख कर भी मनुष्य अन्धा होता है, विद्या रख कर भी, धन-पदवी, हुनर, कला, ज्ञान रख का भी मनुष्य अन्धा रहता है? हां, दुसरों के गुणों को, उपकारों को, दुखों को, देखने के लिहाज से व अपनी कमीयां देखने के लिहाज से मनुष्य बहुत सी

मात्रा में अन्धा है। इसलिए घरों में, मानव समाज में नरक है। यह अन्धा पन दूर हो सकता है। देवात्मा की ज्योति प्राप्त होने से योग्यता अनुसार मनुष्य को उपरोक्त पक्षों में दिखाई देने लग जाता है। सभापति जी ने अपनी व अन्य उदाहरणों द्वारा बताया कि कैसे देवात्मा की रोशनी में उपरोक्त अन्धेरा दूर हुआ है व और हो सकता है। कुछ अन्धों को दुसरों का अन्धेरा दिखाई देता है परन्तु फिर भी अन्धे ही रहते है। उनको अपना आप नज़र नहीं आता। आगे आत्मा सम्बन्धी, उनके रोगों, पतन, हानि प्रति अन्धेरो, , बहुत ही गहरा अन्धेरा है। उसको भी हमारी योग्यता के अनुसार दूर देवात्मा ही कर सकते हैं।

रात की सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई थी। इसमें 35-36 जनों के करीब हाजरी थी। सभा में बताया गया कि पहले विद्या की कोई कदर नहीं थी। अब लोग विद्या के लिए लाखों रूपये खर्च कर रहे हैं। इस प्रकार अभी मनुष्य को उच्च जीवन की कदर नही जागी। इसकी कदर जागने से लोग देवात्मा के दर पर खुशी-खुशी आएंगे। हितकर चीज़ बढ़ने के लिए है। मनुष्य का हित उच्च नियमों से जुड़ा हुआ है। इसलिए उन नियमों के कदर व पूर्ति जरूर होगी। प्रत्येक भली चीज का भविष्य है। देवात्मा की शिक्षा व कारज द्वारा ही मनुष्य का हित सम्भव है। इसलिए इसका फैलना जरूरी है।

13 नवम्बर की सुबह को श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने गजसिंह पुर करवाई और एक सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने यहां पर सभा करवाई। इसमें 20-22 जनों के करीब हाजरी थी। सभा में बताया गया कि पाप क्या होता है। नीच गतियां कितने प्रकार की होती हैं? पाप चारों जगतों के वजूदों से होते हैं। भौतिक जगत के सम्बन्ध में बेजान वस्तुएं, पौधों, पशुओं प मनुष्यों के प्रति नीच गतियां समझायी गई। कितने ही धर्म स्थान जमीन को दबाकर बनाए गए हैं। क्या यह कोई पाप नहीं है? इसके बारे में मनुष्य को पता ही नही लगता। अपने जूतों, सवारी, घर, वस्त्र, आदि सम्बन्धी लापरवाही व हानि पाप है। पाप से होने वाली हानियां व विशेष कर आत्मिक हानि को समझने की कोशिश की गई।

मंडी गज सिंह पुर (राजस्थान) में सभार

13 नवम्बर 10 बजे श्री भीम सैन मित्तल के घर सभा रखी गई। श्री मान गोपाल कृष्ण जी व श्री मान बलबहादुर सिंह जी पदमपुर से पहुंच गए। 30-40 क करीब स्त्री पुरूष सभा में शामिल हुए। सभा में ब्यान किया गया कि धर्म प्राप्ति के बिना जीवन व्यर्थ बर्बाद हो जाता है। प्रचलित धर्म मतों में सम्बन्धों को धर्म प्राप्ति में एक बड़ी रूकावट व जंजाल समझा व उसका प्रचार किया गया। उनको सच्चाई नही परन्तु माया या भ्रम कहा गया। देवात्मा जो देवधर्म के प्रर्वतक हैं, उन्होंने सम्बन्धों को भ्रम या माया नही समझा। उन्होंने फरमाया है कि अपने भिन्न-भिन्न सम्बन्धों में उच्च भावों द्वारा किए शुभ व्यवहार धार्मिक व्यवहार हैं। जीवन का निर्माण व धर्म प्राप्ति सम्बन्धों के बिना कोई अर्थ नही रखते। कुछ जन सभा से काफी प्रभावित रहे।

शाम 3 बजे सभा डाक्टर श्रवण कुमार बिश्नोई के घर की गई। यह सभा भी श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। 30-35 के करीब जन आकर शामिल हुए। इसमें बताया गया कि मनुष्य की मुख्य व मूल इच्छा सुख प्राप्ति है। सुख प्राप्त करते-करते यह सुखों के भाव बढ़ जाते हैं व सुख अनुरागों के रूप में विकसित हो जाते हैं। यह अनुराग मनुष्य की परिचालक शक्तियां बनकर उसके लिए अति भयानक दुःख व बर्बादी पैदा करते

हैं। जैसे नशा सुख अनुराग, धन अनुराग, स्वाद सुख अनुराग, सामाजिक जीवन में दुखदाई नारकीय लीला पैदा करते हैं, उदाहरणों के द्वारा बहुत उज्जवल रूप से बताया गया। स्वार्थ सुख व ईर्ष्या द्वारा जो मनुष्य के बहुत घृणित रूप बन जाते हैं, उस की तस्वीर पेश की गई। देवात्मा की देव-ज्योति में मनुष्य इन सुखों की घृणित गुलामी से बचने की प्रेरणा अनुभव करता है। देवात्मा में देवप्रभाव मनुष्य को अपने विनाश से मोड़कर उसका अपना जीवन अपने लिए व दूसरों के लिए कल्याणकारी बना देता है। बहुत सुन्दर दृष्टांत द्वारा देवअसरों में कारज का ब्यान किया गया। कुछ जनों ने सभापति जी का हार्दिक धन्यवाद किया।

रात 8:30 बजे सभा श्रीमान खेम चन्द जी के घर की गई। सभा में नीच घृणा के बारे में ब्यान किया गया। नीच घृणा क्यों पैदा होती है व कैसे बर्बादी पैदा करती है। उदाहरणों द्वारा पेश किया गया। देवात्मा के देवप्रभावों में ही इसकी समझ आ सकती है। इसकी सच्ची बेसुधी देवप्रभाव ही हैं।

14 नवम्बर सुबह 8 बजे फिर एक सभा श्रीमान खेम चन्द जी के स्थान पर की गई। पारिवाारिक जीवन में ही जीवन बिताते हुए हम धार्मिक जीवन प्राप्त कर सकते हैं। उच्च भावों द्वारा घर में स्वर्गीय वातावरण पैदा हो सकता है। परिवारिक जनों के गुणों पर विचार करने से वह सम्बन्धी प्यारे महसूस होने लगते हैं। इन सम्बन्धियों की सेवा व मेहरबानियों को सामने लाकर, उसके बदले में कुछ करके घर एक स्वर्ग का नमूना बनना शुरू हो जाता है। सुखों के द्वार खुल जाते हैं। घर-घर नही रहता बल्कि मन्दिर का नमूना बन जाता है। अपने दोष व अपराधों का स्मरण एक ओर लाजवाब स्तर है जो धर्म जीवन की प्राप्ति के लिए बेहद जरूरी है। गुण चिन्तन की कुछ घटनाएं सुन्दर ढ़ग से पेश की गई। देवअसरों ने प्रवेश कर के डा. श्री राम जी के जीवन की काया ही पलट दी। वह अपने दोषों को देखने के योग्य हो गए, देवात्मा की देवज्योति में। वह माफीयां मांगने के लिए मजबूर हो गए। वह घर जहां पर घोर नरक था, आत्मघात के यत्न किए गए, वह उच्च बरकतों को प्राप्त करने का भागी बन गया। कुछ अन्य उदाहरणों द्वारा यह प्रभावशाली सभा 10 बजे सम्पन्न हुई। इस सभा के बीच एक नौजवान ने अपने माता-पिता के चरणों में लेट कर प्रणाम करने कर साधन किया।

गंगानगर:-15 नवम्बर को 7 जनों की पार्टी पदमपुर से शाम यहाँ पहुंची। रात को यहाँ सभा रखी गई। इसमें पुराने सामाजिक व परिवारों के कई जन पहुंच गए थे। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी दोपहर बाद वापिस आ गए थे। 8:30 बजे सभा की गई व इसमें बताया गया कि मनुष्य की परिचालक शक्तियां क्या हैं। उनका ज्ञान पाना जरूरी है। नही तो मनुष्य बड़ी हानियों से बच नही सकता।

16 नवम्बर सुबह भी एक सभा की गई। इसमें बताया गया कि अच्छे बनने का नाम ही धर्म है। अच्छे व्यवहार से मनुष्य अच्छा बनता हैं। अच्छे व्यवहार उच्च भाव पैदा करते हैं नीच मनुष्य को उच्च बनाते हैं।

इस जगह से श्रीमान जी मंडी डबवाली

पहुंचे। वहां मन्दिर की सफाई आदि का पता लिया। इसके इलावा मास्टर हंस राज सिंह जी को मिले व अन्य यहां कई जनों को मिलकर शाम को थराजवाला पहुंच गए।

थराजवाला:-यहाँ सब सेवको व श्रद्धालुओं को मिला गया। महोत्सव के बारे में बताया गया। सब को वहां पहुंचने की प्रेरणा दी गई। रात को एक सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी के घर की गई। इसमें गुरू महाराज जी का कारज सुनाया गया।

कल्याण:-17 नवम्बर शाम को श्रीमान बलदेव सिंह जी यहाँ पहुंचे। रात को 8 बजे यहाँ सभा की गई। लगभग सब साथी सेवक व श्रद्धालु इस सभा में शामिल हुए। बताया गया कि गुरू महाराज के सम्बन्ध में आरम्भिक दिन हैं। सब को गुरू महाराज की छवि को प्रणाम करने की प्रेरणा दी गई। संक्षेप में साधन करना बताया गया। भजन गाने के सम्बन्ध में कहा गया। देवस्तोत्र को समझ-समझ कर गाने के लिए कहा गया। पुस्तक पढ़ने को कहा गया। इस प्रकार सब को महोत्सव पर बढ़-चढ़ कर पहुंचने के लिए कहा गया। अगले दिन श्रीमान जी चण्डीगढ़ पहुंचे।

.....*.....

माता-पिता और विशेष सत्संग

पाठकों की सेवा में सूचित किया जाता है कि हर साल की तरह इस साल भी कल्याण (ज़िला बठिण्डा) में माता-पिता दिवस और विशेष सत्संग 24, 25, 26 फरवरी को रखा गया है। आप सब से निवेदन है कि इस शुभ अवसर पर अधिक से अधिक संख्या में शामिल होकर लाभ उठायें।

धन्यवाद।
मन्त्री

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts